Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत (Classical Conditioning Theory of Learning)

परिचय (Introduction):

- शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत (Classical Conditioning Theory) सीखने का एक आधारभूत सिद्धांत है, जिसे इवान पैवलॉव (Ivan Pavlov) ने 1903 में प्रस्तुत किया।
- यह सिद्धांत बताता है कि सीखना (Learning) एक प्रकार का संयोग (Association) है जो उत्तेजना (Stimulus) और प्रतिक्रिया (Response) के बीच बनता है।
- पैवलॉव ने दिखाया कि कैसे कोई तटस्थ वस्तु (Neutral Object) भी यदि बार-बार किसी प्राकृतिक उत्तेजना (Natural Stimulus) के साथ प्रस्तुत की जाए, तो वह भी उसी प्रकार की प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगती है।

पैवलॉव का प्रयोग (Pavlov's Experiment):

1. प्राकृतिक प्रतिक्रिया का निरीक्षण: पैवलॉव ने देखा कि जब कुत्ते को भोजन दिया जाता है, तो उसके मुँह से स्वतः ही लार (saliva) निकलती है।
    - भोजन = अनानुबंधित उत्तेजना (Unconditioned Stimulus - UCS)
    - लार = अनानुबंधित प्रतिक्रिया (Unconditioned Response - UCR)

2. तटस्थ उत्तेजना का प्रयोग: अब पैवलॉव ने भोजन देने से पहले एक घंटी (Bell) बजाई। घंटी की आवाज़ सुनकर कुत्ता कोई प्रतिक्रिया नहीं देता था।
    - घंटी = तटस्थ उत्तेजना (Neutral Stimulus - NS)

3. दोनों उत्तेजनाओं का संयोजन (Pairing): पैवलॉव ने कई बार घंटी बजाकर तुरंत बाद कुत्ते को भोजन दिया।

Edit with WPS Office

4. सीखना (Conditioning): कुछ बार दोहराने के बाद केवल घंटी की आवाज़ पर ही कुत्ते के मुँह से लार आने लगी — भले ही भोजन न दिया गया हो।
    - घंटी पर अनुबंधित उत्तेजना (Conditioned Stimulus - CS) बन गई।
    - घंटी पर आने वाली लार अनुबंधित प्रतिक्रिया (Conditioned Response - CR) बन गई।

मुख्य अवधारणाएँ (Key Concepts):

- Unconditioned Stimulus (UCS) - स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाली उत्तेजना (जैसे भोजन)
- Unconditioned Response (UCR) - स्वाभाविक प्रतिक्रिया (जैसे भोजन पर लार आना)
- Neutral Stimulus (NS) - प्रारंभ में कोई प्रतिक्रिया नहीं उत्पन्न करने वाली उत्तेजना (जैसे घंटी की आवाज़)
- Conditioned Stimulus (CS) - अनुबंधन के बाद प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाली उत्तेजना (जैसे घंटी की आवाज़)
- Conditioned Response (CR) - सीखी हुई प्रतिक्रिया (जैसे घंटी सुनकर लार आना)

शास्त्रीय अनुबंधन की प्रक्रियाएँ (Processes of Classical Conditioning):

1. Acquisition (अर्जन):

    यह वह अवस्था है जब CS और UCS को बार-बार साथ प्रस्तुत किया जाता है और व्यक्ति सीखना शुरू करता है।

2. Extinction (लोप):

    जब CS (जैसे घंटी) बार-बार बिना UCS (जैसे भोजन) के प्रस्तुत की जाती है, तो धीरे-धीरे CR (लार आना) समाप्त हो जाती है।

3. Spontaneous Recovery (स्वतः पुनर्प्राप्ति):

    कुछ समय बाद, बिना किसी अभ्यास के, CS पर पुनः CR उत्पन्न हो सकती है।

Edit with WPS Office

4. Generalization (सामान्यीकरण):

   जब व्यक्ति समान प्रकार की उत्तेजनाओं पर भी वही प्रतिक्रिया दिखाने लगता है।

   जैसे — यदि घंटी की जगह कोई अन्य आवाज़ सुनाई दे तो भी कुत्ता लार छोड़ दे।

5. Discrimination (भेदभाव):

   व्यक्ति सीख जाता है कि कौन-सी उत्तेजना पर प्रतिक्रिया करनी है और कौन-सी पर नहीं।

शास्त्रीय अनुबंधन के सिद्धांत (Laws of Classical Conditioning):

1. संयोग का नियम (Law of Association):

   जब दो उत्तेजनाएँ बार-बार साथ आती हैं, तो उनके बीच संबंध बन जाता है।

2. बारंबारता का नियम (Law of Frequency):

   जितनी बार CS और UCS को साथ प्रस्तुत किया जाएगा, उतनी ही जल्दी सीखना होगा।

3. निकटता का नियम (Law of Contiguity):

   यदि CS और UCS को समय के अंतराल के बिना एक साथ प्रस्तुत किया जाए तो अनुबंधन जल्दी होता है।

शिक्षा में उपयोगिता (Educational Implications):

1. भय या घृणा कम करना:

   छात्र के किसी डर को सकारात्मक अनुभवों से जोड़कर समाप्त किया जा सकता है।

Edit with WPS Office

2. सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना:

   शिक्षक का मधुर व्यवहार और प्रोत्साहन छात्रों को सीखने के प्रति सकारात्मक बनाता है।

3. कक्षा अनुशासन:

   अच्छे व्यवहार को पुरस्कार और प्रशंसा से जोड़ना छात्रों में अनुशासन विकसित करता है।

4. प्रेरणा (Motivation):

   सही अनुबंधन द्वारा छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

5. भावनात्मक नियंत्रण:

   भावनात्मक प्रतिक्रियाओं जैसे भय, क्रोध आदि को शास्त्रीय अनुबंधन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

आलोचनाएँ (Criticisms):

1. यह सिद्धांत केवल स्वाभाविक या अनैच्छिक प्रतिक्रियाओं तक सीमित है।
2. यह मानव की जटिल मानसिक प्रक्रियाओं जैसे सोच, तर्क, निर्णय आदि को नहीं समझाता।
3. यह सक्रिय (voluntary) सीखने को नहीं समझा सकता।

निष्कर्ष (Conclusion):

- शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत यह दिखाता है कि सीखना केवल सोचने-समझने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि अनुभवों और संयोगों से भी होता है।
- यह सिद्धांत मनोविज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा और व्यवहार संशोधन (Behaviour Modification) में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Edit with WPS Office